वास्तु शास्त्र

वेदों से संगृहीत शास्त्रों में से "ज्योतिष शास्त्र" एक है। इसे "वेदों का नेत्र" भी कहते हैं। इसी शास्त्र का एक अंग है "वास्तु शास्त्र"। यह शास्त्र मंगलमय एवं शिल्पादि निर्माणों का आधार है। यह संसार के समस्त प्राणियों को समान रूप से श्रेय पहुँचानेवाला शास्त्र है। इसे "प्रगति दायक निर्माण" भी कह सकते हैं। यह कल्पनाओं के बजाय अनुभव को प्रधान्यता देनेवाला एक अपूर्व शास्त्र है। इस शास्त्र को सृष्टि वैचित्र्य एवं मानव कल्याण के बीच की कडी भी मान सकते हैं। क्यों कि दिशा मानव की दशा को बदल सकती है।

वास्तु शास्त्र प्रचीन काल से है। लेकिन राजा महाराजाओं तक ही सीमित होकर आम जनता तक पहुँच न पाया। धीरे धीरे कई परिवर्तन आये। तानाशाही के स्थान में प्रजातंत्र का आविर्भाव हुआ। शास्त्रीय अथवा तकनीकी प्रगति के कारण "समाचार क्रान्ति" आयी। फलस्वरूप संपन्न लीागों तक ही सीमित रहनेवाला "वास्तु शास्त्र" आम आदमी तक पहुँच गया।

"अर्थ मनर्थं" "नास्ति ततस्सुख लेशं "आदि श्लोंकों से पता चलता है कि अर्थ अनर्थदायक है। लेकिन भ्राँतिवश लोग समझते हैं कि धन ही सब कुछ है। धनवान ही बलवान, गुणवान एवं भगवान है। लेकिन यह सच नहीं है। मैंने कई धनवानों से मिला और मानसिक प्रशांतता के लिए उनकी तडप भी देखी। अन्त में इस निर्णय पर पहुँचा कि – "अर्थं दु:ख भाजनं" की कहावत सच है। मानसिक प्रशांतता से बढकर अमूल्य कुछ और है ही नहीं। "जब आवत संतोष धन, सबधन धूरि समान।"

यदि हमें सुख–चैन, भोग, भाग्य आदि प्राप्त करना है तो "वास्तु" का अनुसरण अनिवार्य है। क्यों कि विधातृ निर्मित पाँच भौतिक शरीर तथा मानव निर्मित निर्माणों के बीच निकट सम्बन्ध है। इसलिए इसी सम्बन्ध की जानकारी दिलाने वाले "वास्तु शास्त्र" को अपनाना सर्व श्रेयोदायक माना जाता है।

वास्तु दोष के कुछ अलामत

वास्तु दोष के कारण दिखाई देनेवाली कई निशानियाँ जैसे: व्यभिचार, अन्य औरतों के मोह में पडना, अपनी घरवाली से असंतुष्ट होना, जुआ खेलना, शराब पीना, परिवार के व्यक्तियों को ही हानी पहुँचाने की बात सोचना, पारिवारिक झगडे, पति–पत्नी के बीच झगडे, एक दूसरे पर आक्रमण करना, आत्महत्या की बात सोचना, अथवा दूसरों की हत्या करने का ख्याल रखना, चोरी करना, उधार माँगते रहना, ज्यादा खर्च करना, खर्जों की अदायगी के लिए नये खर्ज करना, लाख कोशिश करने पर भी खर्ज न चुका सकना, मानसिक पीडा, निस्संतु होना, बच्चों की अकाल मृत्यु, बच्चों का अंग वैकल्य, बच्चों की बीमारियाँ, बच्चों की तरक्की ठीक तरह से न होना, धन्धे में आशाजनक प्रगति का न होना, व्यापार में पूँजी पर सूद तक न निकलना, साझेदारी की समस्यायें, परिवार के लोगों में दीर्घ रोग जैसे: कैन्सर, एइड्स, पक्षवात्, हृदयरोग, चर्मरोग आदी का होना। मानसिक रोग जैसे:

डरलगना, पागलपन, दुनियाँ से ऊब कर सन्यास स्वीकार की बात सोचना, असंभव कार्यों की कोशिश करना, गल्ती काम करके पकडाजाना, आग–बिजली के खतरे होना, नौकरी न मिलना, लाख प्रयास करने पर भी विदेश न जा सकना आदि। इसी तरह कन्याओं के लिए अपने माँ बाप की इच्छा के विरुद्ध दूसरों से प्रेम करना, उनके साथ पलायन करना, शादी होने पर भी पूर्व प्रेमियों से सम्बन्ध जारी रखना, पति से लडकर मैके पहुँचना, पति के अनुरोध पर माता पिता को पैसों के लिए सताना– इत्यादि। अत: ऐसी परिस्थितियों में हम वास्तु शास्त्र का अनुसरण कर इन दोषों का निवारण कर सकते हैं और सुख चैन से अपना शेष जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

चहार दीवार

वास्तु के दो प्रकार होते हैं। गृहवास्तु और परिसर वास्तु। परिसर के निम्नोन्नत स्थान, भारी निर्माण, जल प्रवाह आदि का प्रभाव प्रहरी पर होता है। इसलिए वास्तु में प्रहरी की प्राधान्यता होती है। अत: प्राचीन ऋषियों ने प्रहरी के निर्माण में सावधानी बरतने को कहा है।

प्रश्न उठता है कि घर का निर्माण पहले करें या प्रहरीका। वास्तु विचार से पता चलता है कि प्रहरी का निर्माण ही पहले करें। प्राकार (चहार दिवारी) से ही घर को बल एवं आकार प्राप्त होता है। वास्तु शास्त्र के अनुसार शुभ स्थल का निर्णय करने के पश्चात्त स्थल शुद्धि करना है। उसके बाद ईशान्य में एक खाई/कुँआ या बोर डालने के बाद प्रहरी का निर्माण आरंभ करना है। यदि पहले से ही ईशान्य में कुँआ हो तो उसे बन्द नहीं करना है।

पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण की दीवारों के समाहार को ही प्रहरी कहते हैं। इनमें एक दीवार के न होने से भी प्रहरी असंपूर्ण होगी। एक ओर दूसरों की दीवार ही क्यों न हो चारों ओर दीवारों का होना अनिवार्य है। प्रहरी के दक्षिण एवं पश्चिमी दीवारें ऊँची तथा उत्तर एवं पूर्वी दीवारें उनसे कुछ कम ऊँचाई के हो सकते हैं। जमीन के दक्षिण एवं पश्चिमी स्थान उन्नत तथा पूरब और उत्तरी स्थान निम्न होना चाहिए। यदि जमीन के पश्चिम, दक्षिण तथा नैरुति में पेड हों तो उन्हें किसी हालत में गिराना नहीं। लेकिन पूरब, उत्तर तथा ईशान्य में ऊँचे पेड नहीं होना चाहिए। हाँ कुछ फूल की कुँडियाँ रख सकते हैं। नैरुति के निर्माण के समय दक्षिण–पश्चिम 90^0 का होना अनिवार्य है। साथ ही साथ पूर्वोत्तर में कुछ बढत हो तो बहुत अच्छा है। लेकिन पूरब एवं उत्तर के सरहद में किसी प्रकार का निर्माण नहीं होना है। खाली जगह पश्चिम से पूरब में ज्यादा और दक्षिण से उत्तर में ज्यादा होना है। ट्राक्टर आदि वाहनों के आने जाने की सुविधा के लिए प्रहरी के द्वार चौडे तथा विशाल होना है। हाल ही में लोग प्रहरी के निर्माण में भी पिल्लर सिस्टम अपना रहे हैं। इसके लिए नीचे बताये हुए तरीखे में पहले उत्तर से शुरू करके पूरब में, वायुव्य में, आग्नेय में फिर दक्षिण में, पश्चिम में और आखिर में नैरुति में खोद लेना है।
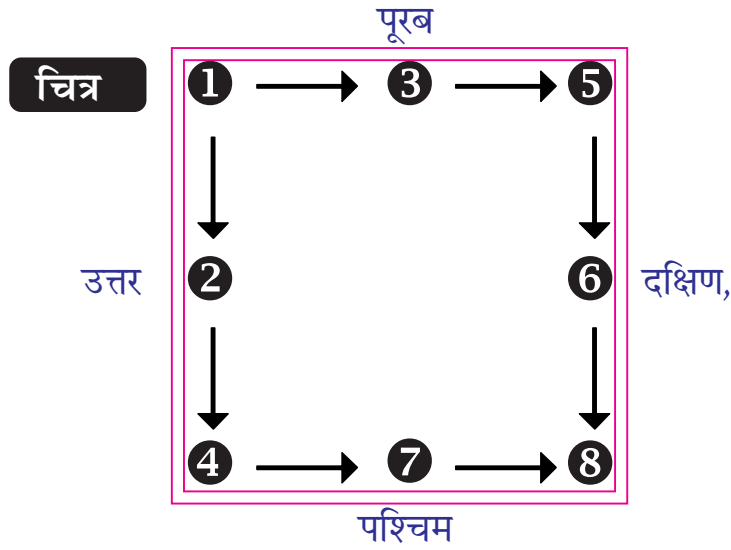
इस प्रकार प्रहरी का निर्माण पूरा होनेसे वास्तु बल की वृद्धि होकर निर्माण जल्दी से जल्दी पूरा होगा।

पूरब मुख द्वार वाले गृह को, मुख द्वार के सामने ही प्रहरी द्वार रखना है। लेकिन वह बीच में होगा। इसलिए उत्तर के खाली जगह को केन्द्र बनाकर पूरब में (उच्च में) और एक द्वार रखना मुनासिब होगा।

पश्चिम सिंह द्वार गृह को मुख द्वार के सामने पश्चिम में (नीच में)प्रहरी द्वार रखकर उत्तर के खाली जगह को केन्द्र बनाकर पश्चिम वायुव्य में (उच्च में) और एक द्वार रखना है।

उत्तर सिंह द्वार गृहको मुखद्वार के सामने उत्तर में (नीच में)प्रहरी द्वार रखकर पूरब के खाली जगह को केन्द्र बनाकर ईशान्य में (उच्च में) और एक द्वार बनाना है।

दक्षिण सिंह द्वार गृह को मुख द्वार के सामने पश्चिम में (नीच में) प्रहरी द्वार रखकर पूरब के खाली जगह को केन्द्र बनाकर दक्षिण आग्नेय में (उच्च में) और एक द्वार बनाना है।

पूरब और उत्तर मुख वाले गृहों के मद्य में (उच्च में)द्वार रख लें तो, दूसरे द्वार की जरूरत नहीं पडेगी। पूरब ईशान्य और उत्तर ईशान्य द्वार श्रेष्ट साबित हुए हैं। जैसा भी हो मुख द्वार बाहर को दिखाई देना अच्छा होगा। दक्षिण तथा पश्चिमी सिंहद्वार प्रहरी से कुछ ज्यादा या कम ऊँचाई के हो सकते हैं। लेकिन पूरब और उत्तरी सिंहद्वार अवश्य प्रहरी द्वार से कुछ ऊँचाई पर होना है।

अन्त में फिर एक बार दुहराया जाता है कि ईशान्य (पूर्व अथवा उत्तर) द्वार सर्व श्रेष्ट हैं। दक्षिण आग्नेय, पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिणी द्वार श्रेष्ट हैं। लेकिन नैरुति, पूरब आग्नेय और उत्तर वायुव्य द्वार अशुभ हैं।

घर

नीचे दिखाए हुए चित्र के अनुसार प्रहरी दीवार के अन्दर घर नैऋति भाग में बनाना चाहिए।

रसोइ
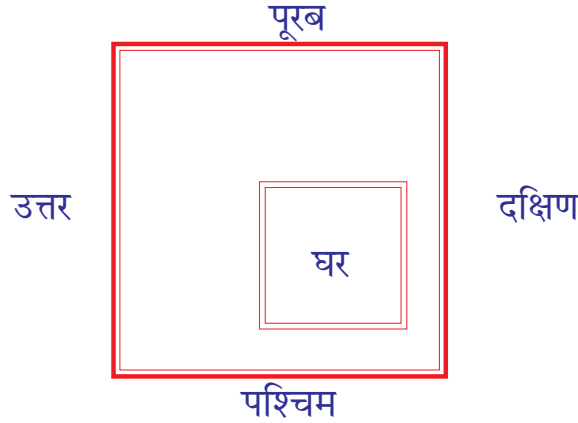
हमेशा रसोई घर आग्नेय में ही होते हैं। किसी भी हालत में उसे ईशान्य में नहीं बनाना है। यदि आग्नेय में अनुकूल न हो तो वायुव्य में बना सकते हैं। वायुव्य के रसोई घर में पूरब की ओर मुँह करके पकवान करना शुभ प्रद होगा। यदि वायुव्य हिस्से के आग्नेय में पकवान करने की सुविधा न होतो, पश्चिम की ओर मुँह करके पकाने में भी कुछ दोष नहीं। लेकिन "स्टव "रखने के लिए बनाया जाने वाला प्लाटफार्म किसी भी हालत में उत्तरी हिस्से में बनाकर उत्तर की ओर मुँहकर के पकाना अच्छा नहीं है। पश्चिमी दीवार से सटाकर बनाया गया प्लाटफार्म वायुव्य तकही सीमित रहना चाहिए। किसी भी हालत में उसे उत्तरी दीवार को नहीं छूने देना चाहिए। इतना ही नहीं प्लाटफार्म का खोखला होना भी जरूर है ।
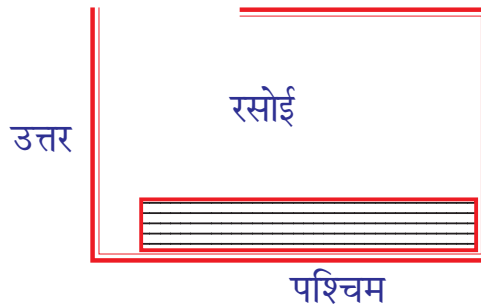
बाद में दक्षिणी दीवार से सेट होकर आग्नेय तक अलमैरह आदि बना ले सकते हैं। अगर रसोई घर से सटे होकर भोजनालय हो तो दरवाजे, अलमैरह के लिए कुछ जगह छोडकर वायुव्य हिस्से में नल अथवा "शिंक" रख सकते हैं । पकवान के लिए बनाये गये प्लाटफार्म के अलावा ऊपरी हिस्से में पकवान की सामग्री रखने का इन्तजाम भी कर सकते हैं।

पश्चिमी दीवार के ऊपर वायुव्य में " वेंटिलेटर " बनालेसकते हैं । " एग्जास्ट फ्यान" भी स्टोव के ऊपरी हिस्से में (यथा साह य वायुव्य में) रख सकते हैं। अथवा उत्तरी दीवार में भी इसका इन्तजाम करले सकते हैं। चाहे तो खिडकी को उत्तरी दीवार के ईशान्य हिस्से में भी रख सकते हैं।

घर के वायुव्य में बनाये गये रसोई घर के उत्तर, दक्षिण माप से भी पूरब, पश्चिम का माप बढकर होना है। अगर उत्तरी, दक्षिण माप पूरब, पश्चिम से बढकर हों तो ईशान्य में दरवाजा होना चाहिए। नैरुति में रसोई घर हो तो, पश्चिम की ओर खडे होकर पकवान करना चाहिए।

आग्नेय हिस्से में रसोई घर : पुराने जमाने में लोग आग्नेय हिस्से में प्रधान घर से कुछ हटकर पीछे की ओर रसोई घर बनाते थे। लेकिन आजकल, घर के अन्दर ही रसोई घर बना रहे हैं। ऐसे घरों में प्लाटफार्म में पूर्वी दीवार को लगे बिना, दक्षिण की दीवार को लगा कर बनाना अच्छा होगा। लेकिन आजकल 99 प्रतिशत लोग पूरब की दीवार से लगाकर ही बना रहे हैं।
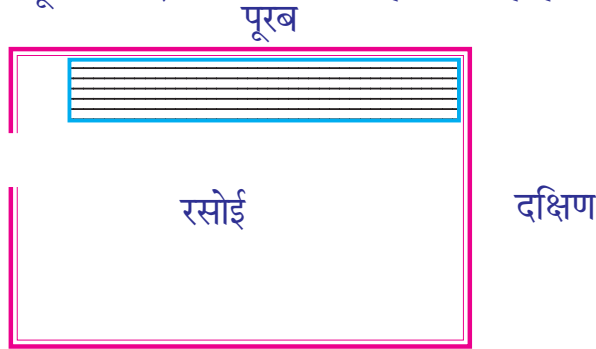
इस विधान में उत्तरी दीवार को लगे बिना "शिंक" बना ले सकते हैं। लेकिन पूर्वी दीवार के ऊपर प्लाटफार्म नहीं बना सकते। "एग्जास्ट फैन" को आग्नेय अथवा दक्षिण आग्नेय दीवार में लगा ले सकते हैं। दरवाजे के सामने दक्षिणी दीवार में खिडकी लगा ले सकते हैं। दरवाजे के सामने दक्षिणी दीवार में खिडकी लगा ले सकते हैं। पूर्वी दीवार में बनाया गया "प्लाटफार्म"और पश्चिम दीवार में बनाये गये अलमारों के अलावा दक्षिणी दीवार में कुछ और प्लाटफार्म नहीं बना सकते।

(रसोई घर वायुव्य में होतो खर्चा अधिक होता, नैरुति में होतो तन्दुरुस्ती का बिगडेगी और ईशान्य में होतो घर कासर्वनाश होगा)

शयनागार और बातरूम

साधारण तथा शयनागार घर के नैरुति में ही बनते हैं। इस से नैरुति भारी होकर गृहस्थ को ईशान्य द्वार से बाहर निकलना पडेगा। फलत: गृहस्थ को उच्च स्थिति प्राप्त होगी। इस कमरे में धन रखने का अलमैरह दक्षिण – पश्चिम दीवारों को लगाकरउत्तर एवं पूरब दिशाओं के सामने रख सकते हैं। रक्षण की दृष्टि से भी यह इन्तजाम अच्छा साबित होगा। इन्सान अपने शयनागार में अधिक समय बिताता है। इसलिए कमसे कम शयनागार तो वास्तु के अनुरूप होना चाहिए। घर के नैरुति हिस्से में "स्टोर रूम" बनाकर उसके बगल में पश्चिम या दक्षिण की ओर शयनागार बनाना अच्छा होगा। लेकिन बहुत से लोग इसे पसन्द नहीं करते। तोभी नैरुति में स्टोर रूम बनाने वालों को ध्यान रखना चाहिए कि स्टोर रूम का "फ्लोरिंग" अन्य कमरों के "फ्लोरिंग" से कुछ ऊँचा होना चाहिए।

शयनागार में पलंग बिछाने के बाद पूरब एवं उत्तर में ज्याद खाली जगह छोडना है। गृहस्थ घर के नैरुति में सोता है तो ईशान्य अथवा आग्नेय हिस्सों में बच्चों को सोने का इन्तजाम करना है। कुछ वास्तु शास्त्रीयों का मत है कि प्रथम सन्तान दक्षिण के कमरे में, द्वितीय सन्तान आग्नेय में, तृतीय सन्तान पश्चिम में, चौथा सन्तान वायुव्य में सोना है। सोते समय सिर दक्षिण की ओर करना श्रेष्ट है। शयनागार दक्षिण, पश्चिम, उत्तर एवं नैरुति में बना सकते हैं। लेकिन पूरब, आग्नेय अथवा ईशान्य में बनाना श्रेयोदायक नहीं होगा।

स्नान गृह :

स्नान गृह घर के वायुव्य अथवा आग्नेय में होना अच्छा होगा। सुविधा न हो तो वास्तु नियमों का पालन करते हुए नैरुति में भी बनासकते हैं। किसी भी हालत में स्नान गृह ईशान्य में नहीं बना सकते। स्नान गृह के कुछ नमूने:-
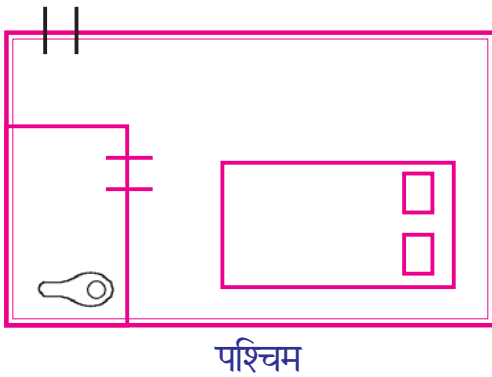
(स्नान गृह वायुव्य में आने से ईशान्य की वृद्धि हुई है)
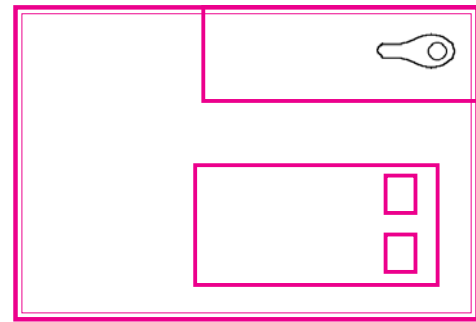
(स्नान गृह आग्नेय में आने से पूर्व ईशान्य की वृद्धि हुई है)

पूराने जमाने में स्नान गृह मुख्य घर के बाहर पूर्व आग्नेय अथवा उत्तर वायुव्य में बने जाते थे। स्नानगृह ईशान्य के बजाय कहीं भी वास्तु के नियमों का पालन करते हुए बना ले सकते हैं। लेकिन पानी गरम करने का चूल्हा अन्दर नहीं रखना चाहिए। लेकिन "वाटर हीटर" रखले सकते हैं। उत्तर मुख द्वार वाले घर के लिए पूर्वी आवरण के पूर्वी आग्नेय में प्रधान गृह को छुए बिना बना सकते हैं। पश्चिम की ओर खाली जगह हो तो पश्चिम प्रहरी से पूरब के प्रधान गृह को लगे बिना बरामदा बनाकर उसमें स्नान गृह बना सकते हैं। उत्तर मुख द्वार गृह के सामने बनाना हो तो उत्तर वायुव्य में बना सकते हैं। लेकिन, प्रधान गृह एवं स्नान गृह के बीच की खाली जगह से स्नान गृह तथा पूर्व प्रहरि के बीच की खाली जगह ज्यादा होना चाहिए। दक्षिण में खाली जगह हो तो दक्षिण प्रहरी से उत्तर की ओर प्रधान गृह को छुए बिना बरामदा बनाकर स्नान गृह बना सकते हैं।

स्टोर रूम

स्टोर रूम हमेशा नैरुति में ही बना लेते हैं। अगर सुविधा हो तो पश्चिम अथवा दक्षिण दिशा में भी बना सकते हैं। किसी भी हालत में घर के पूरब और उत्तरी दीवारों को लगा कर नहीं बना सकते। दक्षिण और पश्चिम दीवारों को लगा कर बनाये गये "स्टोर रूम" के द्वार ईशान्य में रखलेते हैं। स्टोर रूम में खिडकी के बजाय "वेंटिलेटर" बनालें तो हवा आसान से आ जा सकती है। "शेल्फ" भी जितने चाहे उतने बनाले सकते हैं। इस कमरे के लिए कोई माप दंड नहीं है।

पूजा गृह

पुराने जमाने में पूजा गृह ईशान्य में ही बनाते थे। घरवालों के साथ साथ पुरोहित को भी बैठने लायक बडे कमरे पूजा गृह के लिए बनाते थे। लेकिन आज जगह की कमी के कारण पूजा गृह का दायरा कम हो गया है। ईशान्य में कुछ भी वजन नहीं रख सकते। इसके अलावा उसे कूडा करकट के बिना साफ सुथरा होना है। इसलिए नैरुति में पूजा गृह नहीं बना सकते। पूर्वी हिस्से में पूजा गृह बनाने से आरोग्य सौभाग्य प्राप्त होंगे। लेकिन यहाँ भगवान की मूर्ती रखने के लिए कोई "प्लाटफार्म" नहीं बना सकते। चकले की पेटी बनाकर पूर्वी दीवार को लगाये बिना रख सकते हैं। उत्तर की ओर पूजा गृह बनाना चाहें तो उत्तरी दीवार को लगाकर "प्लाट फार्म" नहीं बना सकते। चकले की पेटी को उत्तरी दीवार को लगाये बिना रखकर उसपर भगवान की मूर्ती को रख सकते हैं। दक्षिण की ओर पूजा गृह बनाना चाहें तो पश्चिमी दीवार को लगाकर (पूर्वी दीवार को लगाये बिना) एक "प्लाटफार्म" बनाकर उसपर भगवान की मूर्ती रखकर पूजा कर सकते हैं। पश्चिम की ओर पूजा गृह बनाना चाहे तो शुभ प्राप्ति के लिए पश्चिमी दीवार को लगाकर "प्लाटफार्म" बनाकर उस पर देवता मूर्ती को प्रतिष्ठित कर पश्चिम की ओर मुँह कर के पूजा कर सकते हैं। इसमें कुछ भी दोष नहीं। इन सबसे बढ कर पूजा गृह बनाने का और एक श्रेष्ठ तरीखा है। मुझसे संपर्क करें तो अवश्य बताऊँगा।

पानी का "सम्प"

आजकल कुँओं के स्थान में पानी के सम्प आ गये हैं। पूरे जमीन के ईशान्य में सम्प अथवा कुँआ का होना श्रेष्ठ है। पूर्व अथवा उत्तरी हिस्से भी सम्प अथवा कुँओं के लिए योग्य हैं। इन कुँओं को पूरे ईशान्य में भी नहीं होना है। ये प्रहरी तथा प्रधान गृह को भी नहीं छूना है। किसी भी हालत में कुँए दक्षिण, पश्चिम, वायुव्य, आग्नेय तथा नैरुति में नहीं बनाना है। ऐसा बनाने से ये भयंकर दुष्परिणाम ला सकते हैं। पश्चिम में बनायें तो स्त्री दौष्ठय, आर्थिक संकट होंगे। दक्षिण – आग्नेय में हो तो स्त्री नाश होगा। दक्षिण नैरुति में हो तो घर के बडों को आपदायें आ घिरेंगीं। पूर्व आग्नेय में हो तो अग्नि तथा चोर भय होगा। पश्चिम नैरुति में हो तो पुरुषों का दीर्घ रोग पीडित होना, दुर्मरण होना संभव है। दक्षिण में होतो महिलाओं का दुर्मरण होगा। पश्चिम में हो तो पैसों की तंगदस्ती होगी और पुरुषों की तन्दुरुस्ती भी बिगडेगी। पश्चिमी वायुव्य में होतो धन हानी, चोरी न्यायिक तकाजों में घिरे होना संभव है । उत्तर वायुव्य में हो तो स्त्री सुख एवं प्रशान्तता का लोप, स्त्री घर छोडकर भाग चले जायेगी। घर के बीच में भी कुँए का होना अच्छा नहीं।

ओवर हेड टैंक

साधारण तया "ओवर हेड टैंक" नैरुति में ही रखते हैं। ओवर हेड टैंक के कारण नैरुति भारमय होकर घर का मालिक उन्नति पा सकता है। किसी भी हालत में यह टैंक ईशान्य की ओर नहीं रखना चाहिए। यदि नैरुति में कमरा हो और उस पर पानी का टैंक रखने की सुविधा न हो तो, उस कमरे के पूर्व अथवा उत्तर में या कमरे के दीवारों को छुए बिना दक्षिण अथवा पश्चिमी दीवारों को छूते हुए

पानी का टैंक रख सखते हैं। घर के नैरुति कमरे की दीवारों को छूते हुए पानी का टैंक नहीं रखना चाहिए। यदि ऐसी सुविधा न होतो घर के ऊपर पश्चिम अथवा दक्षिण में रखना उचित होगा। इसी तरह पूरब–पश्चिम का माप ज्यादा होने वाली मकान में नैरुति से कुछ पश्चिम की ओर हटे तो भी कुछ भी हर्जा नहीं। उसी तरह उत्तर – दक्षिण माप ज्यादा होनेवाली मकान में पानी का टैंक नैरुति से कुछ दक्षिण की ओर हटे तो भी कुछ हर्ज नहीं। पानी का टैंक आवश्यकता के अनुरूप नैरुति, वायुव्य अथवा आग्नेय में भी रख सकते हैं। यदि वायुव्य अथवा आग्नेय में रख लें तो नैरुति की ऊँचाई को कम किये बिना नैरुति में एक छोटा सा कमरा बना लें तो अच्छा होगा। यदि नैरुति में पानी का टैंक रख लें तो अन्य कोने में मन पसन्द निर्माण करले सकते हैं। याद रहें कि जिधर गृहस्वामी की पलंग होगी, उसके ठीक ऊपर पानी का टैंक न बनायें।

ओवर हेड टैंक
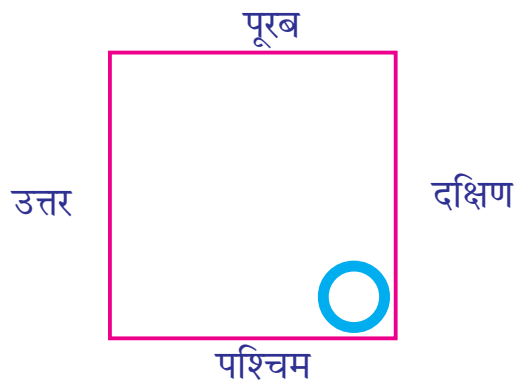
शौचालय

शौचालय हो या उसकी खाई किसी भी हालत में ईशान्य में नहीं बना सकते। आग्नेय, वायुव्य तथा पूरब की ओर ही इसे बनाना चाहिए। आग्नेय में दक्षिणी दीवार से सटे हुए या घर के पूर्व आग्नेय कमरे के पूर्वी दीवार को छुए बिना (मुख्य गृह को छुए बिना) बना सकते हैं। लेकिन शौचालय से घर के बीच की खाली जगह से शौचालय से पूर्वी प्रहरी के बीच की खाली जगह ज्यादा होना अनिवार्य है। शौचालय अगर बाहरी हिस्से में बनाना चाहे तो, घर से भी उपरी सतह पर नहीं बनाना चाहिए। शौचालय की खाई आग्नेय में ही खोदना हो तो पूर्वी आग्नेय में खुदवा सकते हो। यदि उत्तर में शौचालय बनाना है तो, वायुव्य में पश्चिमी दीवार को लगाकर उत्तरी सरहद को छुए बिना उत्तर वायुव्य में मुख्य गृह को छुए बिना बना सकते हो। शौचालय से प्रधान गृह तक की दूरी से शौचालय से उत्तरी प्रहरी के बीच की दूरी ज्यादा होना चाहिए। किसी भी हालत में शौचालय की खाई ईशान्य अथवा नैरुति में नहीं बना सकते । उत्तर वायुव्य, पूर्व आग्नेय के अलावा प्रधान गृह के वायुव्य तथा आग्नेय हिस्सों में बनाले सकते हैं। शौचालय की खाई किसी भी हालत में प्रधान द्वार के सामने न आयें। शौचालय की खाई पूर्व अथवा उत्तरी दिशाओं में ही खोदना है। शौचालय में उत्तर तथा दक्षिणी ओर मुँह कर बैठने का इन्तजाम करना है।

पूरब की ओर (आग्नेय में)पूर्व प्रहरी को छुए बिना उत्तर से दक्षिण की ओर चढकर वहाँ घूमकर दक्षिण से उत्तर की ओर चढकर पूर्व ईशान्य में"बाल्कनी" पर से उच्च में प्रवेश कर सकते हैं।

पश्चिम की ओर नैरुति में सीढियाँ बनाना चाहे तो उत्तर से दक्षिण की ओर चढकर वहाँ से कुछ घूम कर दक्षिण से उत्तर की ओर चढकर पश्चिम वायुव्य की बाल्कनी पर से उच्च में प्रवेश कर सकते हैं।

उत्तर वायुव्य में सीढियाँ बनाना चाहे तो उत्तर प्रहरी को छुए बिना पूरब से पश्चिम की ओर चढकर वहाँ कुछ घूमकर पश्चिम से पूरब की ओर चढकर उत्तर ईशान्य की बाल्कनी पर से उच्च में प्रवेश कर सकते हैं। (संभव हो तो पूरब को भी बाल्कनी का निर्माण कर सकते हो।)

दक्षिण की ओर नैरुति में सीढियाँ बनाना चाहे तो पूरब से पश्चिम की ओर चढकर वहाँ कुछ मुडकर पश्चिम से पूरब की ओर मुडकर दक्षिण आग्नेय में बनी बाल्कनी पर से उच्च में प्रवेश कर सकते हैं। यहाँ उत्तर में बाल्कनी का होना अनिवार्य है। यथा साध्य पूर्व में भी बाल्कनी बना लें।

घर के अन्दर नैरुति में सीढियाँ नहीं बना सकते। यदि बनायें तो नैरुति में शून्य छा जाकर नैरुति प्रवेश समझा जायेगा। जो हमेशा गल्ती सिद्ध हुआ है। पश्चिम अथवा दक्षिणी दीवार पर भी सीढियाँ बना सकते हैं। यथा साध्य उत्तर एवं पूर्व हिस्सों में सीढियाँ नहीं बनाना है। घर के भीतर सीढियाँ दक्षिण एवं पश्चिमी दीवारों को लगाकर बनाना अच्छा नहीं है।

घर के अन्दर रौंड सीढियाँ बनाना है तो, पूरब अथवा उत्तर की ओर बनाना अच्छा होगा। लेकिन ऊपर की ओर प्रवेश ईशान्य में ही होना चाहिए। लेकिन इन सीढियों को उत्तर अथवा पूर्वी दीवारों को लगे बिना बनाना अच्छा होगा।

कुछ लोग पूर्वी सडक वाले घरों में आग्नेय में सीढियों के नीचे कमरा बना लेते हैं। यह अच्छा नहीं है। इससे कई अनर्थ होंगे। लेकिन दोष परिहारार्थ पूर्व ईशान्य में बाल्कनी बना ले तो अच्छा होगा। लेकिन इस बाल्कनी के लिए नीचे जमीन से ऊपर तक एक स्थंभ बनाना मुनासिब होगा।

दक्षिण सडक वाले तथा पश्चिमी सडक वाले घरों के नैरुति में बनायी गई सीढियों के नीचे भी कमरे नहीं बना सकते। क्यों कि मूल गृह के बीच में यह कमरा बनता है। कुछ लोग उत्तर सडक वाले गृह के वायुव्य में सीढियों के नीचे कमरा बना लेते हैं। जिससे वायुव्य की वृद्धि होकर धन हानी होगी। दोष परिहारार्थ उत्तर ईशान्य में बाल्कनी (स्थंभ उठाकर) बना लेना मुनासिब होगा।

घर के पूरब में दरवजे बनाना है तो, घर के पूरब की दीवार के माप को आधा करके दक्षिण की ओर छोडकर उत्तर की ओर कहीं भी बना सकते हैं। यदि दक्षिण में द्वार बनाना है तो दक्षिणी दीवार के माप को आधा करके पश्चिम की ओर न बना कर पूरब की ओर कहीं भी बना सकते हैं। यदि उत्तर में द्वार बनाना है तो उत्तर के दीवार के माप को आधा करके पश्चिम की ओर न बनाकर पूरब की ओर कहीं भी बना सकते हैं।

यदि भीतरी कमरों में दरवाजे रखना है तो उपरोक्त पद्धति में दो हिस्से करके पूरब या उत्तरी हिस्सों में बना सकते हैं। लेकिन पूरब अथवा उत्तरी छोर से नौ इंच से ज्यादा तथा तीन खदम से भी कम जगह छोडना न भूलें। लेकिन यह द्वार दक्षिण अथवा पश्चिमी छोरों को नहीं लगना है।

नैरुति कमरे के पूरब की ओर द्वार रखना चाहे तो कमरे के उत्तरी सरहद में नौ इंच से भी ज्यादा और तीन कदम से भी कम जगह छोडकर बना सकते हैं।

शुभ द्वार

दक्षिण आग्नेय द्वार, दक्षिण द्वार, पश्चिम द्वार, पश्चिम वायुव्य द्वारा, उत्तर द्वार, उत्तर ईशान्य द्वार, पूरब ईशान्य द्वार

अशुभ द्वार

पूरब आग्नेय, दक्षिण नैरुति, पश्चिम नैरुति तथा उत्तर वायुव्य

कार शेड

कार एक वजनदार चीज है। इसलिए इसे नैरुति में ही रखना वास्तु के अनुसार शुभ प्रद होगा। पूरब और उत्तर गृहवालों को नैरुति में कार शेड बनाना मुश्किल होगा। अत: नैरुति के बजाय अन्य स्थानों में ठहराने का प्रबन्ध करना है।

पूरब गृहवाले पूरब आग्नेय मे या जगह हो तो उत्तर वायुव्य में कार शेड बना सकते हैं। लेकिन इसे मुख्य गृह तथा पूरब की दीवार को छुए बिना आग्नेय में बनाना होगा। अगर यह शेड दक्षिणी दीवार को लगा तो भी कुछ परवाह नहीं। उत्तर गृह वाले वायुव्य हिस्से में शेड का निर्माण कर सकते हैं। लेकिन प्रधान गृह तथा उत्तर वायुव्य दीवार को यह शेड नहीं लगना होगा। दक्षिण गृह वाले नैरुति में कुछ जगह छोडकर शेड बना सकते हैं। यदि नैरुति में जगह छोडना पसन्द न होतो वायुव्य में कार शेड बना सकते हैं। यदि वायुव्य में कार शेड बनाने योग्य स्थान न होतो दक्षिण आग्नेय में बना सकते हैं। किसी भी हालत में ईशान्य में कार को नहीं ठहरा सकते। पश्चिमी गृह वाले नैरुति में कुछ जगह छोडकर घर का निर्माण कर सकते हैं। यदि नैरुति में जगह न हो तो आग्नेय हिस्से में कार शेड बना सकते हैं। उदा:
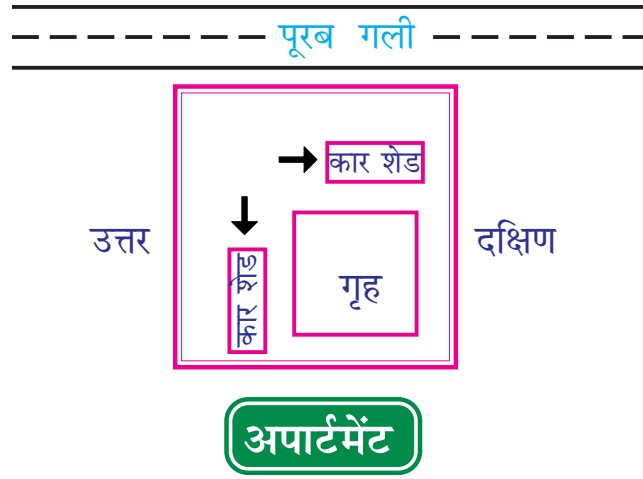
अपार्टमेंट

हर एक अपार्टमेंट के निर्माण में भी वास्तु शुद्धि की आवश्यकता होती है। हर एक अपार्टमेंट के दो द्वार होते हैं। पूर्वी शेड वाले अपार्टमेंट को पूर्व ईशान्य में एक और पूर्व आग्नेय में और एक द्वार होना होगा। पूर्व तथा पश्चिमी रोडवाले अपार्टमेंट के लिए पूर्व में एक द्वार और पश्चिम में और एक द्वार होना होगा। अपार्टमेंट के "ग्रौन्ड फ्लोर" अथवा "सेल्लार" में द्वार आदी नहीं बनाना है। अपार्टमेंट के ईशान्य में नल का गड्डा होना चाहिए। अपार्टमेंट के पश्चिम तथा दक्षिणी दीवारें मजबूत होना चाहिए। पूरब तथा उत्तर की दीवारें कुछ पतली हों तो भी कुछ परवाह नहीं। यथा साध्य उत्तर तथा पूर्व में कुछ ज्यादा खाली जगह चाहिए। यथा संभव " लिफ्ट " दक्षिण एवं पश्चिम में नहीं होना चाहिए। बीच में या उत्तर पूर्व में लिफ्ट का होना मंगलमय सिद्ध हुआ है। सीढियाँ पूरे स्थल के ईशान्य, नैरुति, पूर्व तथा उत्तरी हिस्सों में छोडकर अन्य स्थलों में बनाना चाहिए। पश्चिम अथवा दक्षिणी सीढियों से उच्च कोटि के फल प्राप्त होते हैं।

अपार्टमेंट के हर एक फ्लाट में ईशान्य लोप हुए बिना ईशान्य में दरवाजें रखने से अच्छे फल प्राप्त होते हैं। मुख्य द्वार अथवा ज्यादा बरताव होने वाला द्वार उच्च में ही होना चाहिए। अर्थात पूर्वी रोड वाले अपार्टमेंट को पूर्वी ईशान्य में मुख्य द्वार रखना चाहिए। दूसरे द्वार को पूरे आग्नेय में न रखकर पूर्वी हिस्से में रखलेना अच्छा होगा। अगर पूर्वी आग्नेय में ही रखना हो, तो ईशान्य के द्वार से भी कुछ छोटा द्वार रख सकते हैं। याद रहें कि हर एक को ईशान्य द्वार से ही चलना है और आग्नेय द्वार को ताला लगाना है दक्षिणी रोड वाले अपार्टमेंट को दक्षिण आग्नेय में मुख्य द्वार रखकर दूसरा द्वार दक्षिण में रखलेना चाहिए। सुविधा के न होने पर दक्षिण नैरुति में कुछ जगह छोडकर रखलेना चाहिए। लेकिन इसे ताला लगायें तो बहुत अच्छा होगा।

पश्चिम रोड वाले अपार्टमेंट को पश्चिम वायुव्य में एक मुख्य द्वार तथा पश्चिम में दूसरा द्वार रखना चाहिए। यदि सुविधा न हो तो पश्चिम नैरुति में कुछ जगह छोडकर रख सकते हैं। इस द्वार को ताला लगाकर रखना अच्छा होगा।

उत्तर रोडवाले अपार्टमेंट को उत्तर ईशान्य में एक मुख्य द्वार तथा उत्तर में दूसरा द्वार रखलेना चाहिए। सुविधा न हो तो उत्तर वायुव्य में कुछ जगह छोडकर रख लें। लेकिन इस द्वार को ताला लगा कर रखना न भूलें।

सूचना:- वास्तु युक्त अपार्टमेंट में मेंटेनेन्स एक्सपेन्सेस कम होंगे। इसका "वाचमेन"ठीक तरह से अपना फर्ज निभायेंगा। फ्लाट वालों को नहीं सतायेगा। अन्य कर्मचारी भी ठीक तरह काम करके अपार्टमेंट को साफ सुथरा रखेंगे। अपार्टमेंट के ग्रौंड फ्लोर में बनाये गये वाचमेन के कमरे का दरवाजा भी ईशान्य में रखना होगा। फलत: वाचमेन सबकी भलाई चाहने वाला तथा सच्चरित्र रहेगा।

लॉड्ज

"लॉड्ज" को विश्रान्तिधाम और अतिथि गृह भी कहते हैं। लॉड्ज के निर्माण में भी वास्तु नियमों का पालन करना अच्छा है। यदि यात्रि को लॉड्ज में सुविधा तथा प्रशान्तता न मिले तो वह दुबारा उस लॉड्ज में नहीं ठहरता। फलस्वरूप लॉड्ज के मालिक को नष्ट पहुँचेगा। यदि सही क्रम जारी रहेगा तो लॉड्ज के मालिक को निर्वाहण व्यय भी नहीं मिलेगा। इसके बजाय वास्तु शुद्धिवाले लॉड्ज में अनेक यात्री ठहरेंगे। लॉड्ज का नाम मशहूर होगा और उस लॉड्ज से पर्याप्त लाभ मिलेगा।

लॉड्ज के निर्माण में ध्यान देने वाले कुछ अंश :-

1. लॉड्ज के नैरुति में स्टोर रूम बनाना है। उसके बगल में मालिक का कमरा होना है। चाहे तो उस कमरे को भी किराये पर दे सकते हैं।
2. हर एक कमरे का दरवाजा ईशान्य में अथवा उच्च में होना होगा। पूर्वी कमरों के दरवाजे पूर्व ईशान्य में, दक्षिण कमरों के दरवाजें दक्षिण आग्नेय में पश्चिम कमरों के दरवाजे पश्चिम वायुव्य में तथा उत्तरी कमरों के दरवाजें उत्तर ईशान्य में ही होना चाहिए।
3. "अटैच बात रूम "कमरों के दरवाजें आग्नेय अथवा वायुव्य में होना चाहिए। जिससे कि कमरों में ईशान्य की वृद्धि होकर लॉड्ज प्रगतिपथ में चलेगी। यथा संभव कमरों में स्नानागार को नैरुति में नहीं बनाना चाहिए।
4. लॉड्ज का मुख्य द्वार उच्च में ही होना चाहिए।
5. लॉड्ज के ईशान्य में खाई अथवा कुँआ होना है।
6. दक्षिण, नैरुति एवं पश्चिम में बडे बडे पेड हों तो अच्छा होगा।
7. उत्तर में ज्यादा खाली जगह होतो व्यापार अच्छा चलेगा।

अत: अनुभवी वास्तु शास्त्री से संपर्क जताकर लॉड्ज का निर्माण अथवा संशोधन करवालें तो पीढियों तक लाभ ही लाभ होगा।

इसी संदर्भ में मैं चेन्नै महानगर पालिका के एक लॉड्ज का उदाहरण देना चाहता हूँ। उस लॉड्ज को छ: आदमियों ने मिलकर 99 साल के लिए "लीज अग्रीमेंट"करवालिया। दो करोड तक खर्च करके उसका आधुनिकीकरण भी किया। लेकिन चौदह महीनों से ही उन की तकलीफें शुरू हुई। लॉड्ज अच्छी तरह नहीं चली। साझेदार अलग होने की बात सोचने लगे। उन्होंने तुरन्त एक अनुभवी वास्तुशास्त्री से संपर्क जताकर उस लॉड्ज का संशोधन करालिया फलत: आज वे लोग अच्छे मुनाफे कमा रहे हैं।

शापिंग काम्प्लैक्स

कई दूकानों के समुदाय को शापिंग काम्प्लैक्स कहते हैं। इस में दूकानों के बजाय दफतर, छोटे से होटल आदि भी हो सकते हैं। इस समुदाय के ईशान्य में गड्ढा तथा उत्तर में खाली जगह का होना अनिवार्य है। इस "काम्प्लैक्स" के नैरुति की अर्थात पश्चिम एवं दक्षिण की दीवारें मजबूत होना है। समुदाय में होने वाली दूकानें परस्पर एक दूसरे के आमने सामने न होना चाहिए। ऐसा होने से एक दूसरे के कोने लगकर वास्तु की हानी होगी। अत: निर्माण से पहले ही ठीक तरह की प्रणाली बनवाकर श्रेष्ट रीति से बना लेना चाहिए। फलस्वरूप काम्प्लैक्स के मालिक को किसी प्रकार की आपत्ति के बिना हर माह किराया वसूल होगा। आपस में झगडे फसाद न होंगे। पुलिस एवं वकीलों के चक्कर न लगाना पडेगा। नेल्लूर के एक काम्प्लैक्स का मालिक सन् 2001 में वास्तु विरुद्ध एक काम्प्लैक्स को बनाकर अपने खातेदारों से आये दिन मुश्किल झेलता रहा। अत: एक योग्य वास्त शास्त्री के सलाह पर (कुछ पैसे ज्याद खर्च हों तो भी परवाह नहीं) निर्माण करवालेना सर्वश्रेयोदायक सिद्ध होगा।

स्कूल अथवा कालेज

पुराने जमाने में आज जैसे प्राइवेट स्कूल का बोलबाल न था। केवल सरकारी स्कूलों में ही शिक्षा दी जाती थी। आजकल केवल गरीब लोग ही सरकारी स्कूलों में अपने बच्चों को पढालेते हैं। प्राइवेट स्कूल विद्यार्थियों को आकर्षित करने के लिए कई उपाय सोचते हैं। अपने स्कूलों के बारे में विस्तृत इश्तेहार देते हैं। स्कूलों को वास्तु के अनुरूप बनाकर विद्यार्थियों को कई सुविधाओं की उपलब्धी कराते हैं। योग्य अथवा अनुभवी अध्यापकों को नियमित कर हरएक विषय में सावधनी से सेवायें उपलब्ध करते हैं। इसी कारण से इन स्कूलों के छात्र अच्छी प्रगति पा रहे हैं। फलस्वरूप करोडों रूपये कमा रहे हैं।

वास्तु की ओर ध्यान दें तो स्कूल के लिए ईशान्य लोप न होना चाहिए। ईशान्य ढलाऊ होना तथा कुछ बढत भी होना चाहिए। विद्यालय में दक्षिण, पश्चिम कुछ ऊँचाई पर होना चाहिए। इस ओर बडे बडे पेड हों तो अच्छा होगा। पूरब और उत्तर की दीवारें कुछ कम ऊँचाई के होना चाहिए। केवल 5 प्रतिशत ईशान्य को छोडकर बाकी सब खाली जगहों में पेड रहें तो अच्छा है। चारों ओर हरियाली के छाये होने से बच्चों का मनोल्लास होता है और वे ध्यानमग्न होकर अपनी पढाई जारी रख सकते हैं।

स्कूल के हर एक कमरे का द्वार ईशान्य में ही होना चाहिए। हर एक कमरे में दक्षिण, पश्चिम, नैरुति को छोडकर बाकी सब ओर खिडकीयाँ रख सकते हैं । इससे पर्याप्त हवा एवं रोशनी की उपलब्धी होगी। "रेडिएशन" के असर को कम करने के लिए ऊपर का छत भी 12 फुट से ज्यादा होना चाहिए। फ्लोरिंग ऊँचाई पर होतो वास्तु आकर्षण और भी बढजायेगा। प्रहरी के नैरुति में एक उपगृह बनालें तो अच्छा होगा इससे अद्भुत फल उपलब्ध होंगे। नैरुति में स्टोर रूम हो तो, और भी अच्छा होगा। स्टोर रूम से सटे पूरब या उत्तर में "प्रिन्सिपाल रूम" बनाना है। इस प्रिन्सिपाल रूम के बगल में स्टाफ रूम होना है। स्कूल के पूरब में त्रिशाला हो तो असरदार होगा। सुविधा के अनुसार उत्तर में भी त्रिशाला बना सकते हैं। पाठशाला का निर्माण बडे पैमाने का हो ता है और इसे कई वर्षों तक बच्चों को उन्नति की ओर ले चलना है। अत: अच्छे वास्तु शास्त्रि से संपर्क कर, योग्य इंजनीयर के पर्यवेक्षण में वास्तु शास्त्र का पालन करायें तो मंगलमय होगा।

आज कल पाठशाला के निर्माण में भी वास्तु की ओर पूरा ध्यान दिया जा रहा है। हाल ही में बंगलूर के एक मैनेजमेंट ने एक मामुली वास्तु शास्त्रि से संपर्क कर उनको 516 रूपये कनसल्टिंग फीज दी। उसीकी सलाह पर अठारह लाख रूपये खर्च करके एक पाठशाला का निर्माण भी कराया। लेकिन वास्तु विहीनता के कारण तीन ही सालों में उस स्कूल को बन्द करना पडा। अपने अल्प ज्ञान के कारण उपरोक्त वास्तु शास्त्री का ढोंग रचाने वाला व्यक्ति मैनेजमेंट को अच्छी सलाह न दे पाया और उसका नतीजा नष्टदायक सिद्ध हुआ। अत: फीज की ओर ध्यान न देकर, मुँहमाँगा फीज अदाकर एक अनुभवी एवं योग्य वास्तु शास्त्रज्ञ के निर्देश में निर्माण कार्य जारी रखना चाहिए। जिससे की मैनेजमेंट को सर्वशुभ प्राप्त होगे।

अस्पताल

स्वतंत्रता प्रप्ति के बाद सार्वजनिक सरकरी दवाखाने बनाये जा रहे हैं। आज कल हर एक शहर में नर्सिंग होम स्थापित किये जा रहे हैं। इन में से कुछ नर्सिंग होम वास्तु तृटियों के कारण कुछ ही दिनों में बन्द किये जा रहे हैं। ऐ से नर्सिंग होम में रोगियों को बहुत सा पैसा खर्चा करने पर भी स्वास्थता नहीं मिल रही है। उनकी समस्यायें और भी जटिल हो कर आये दिन कई रोगी मर रहे हैं। योग्य डाक्टर भी अयोग्य साबित हो रहे हैं। अनावश्यक ही ऐसे नर्सिंग होम्स पर काला धब्बा लग रहा है।

मैं ने एसे ही एक नर्सिंग होम को रायलसीमा में देखा है। (उसका विवरण देकर उसे और भी उलझनों में फँसाना मुनाबि नहीं।) अत: हर एक नर्सिंग होम के निर्माण में वास्तु का पूरा ध्यान रखकर निम्न लिखित अंशों पर ध्यान देना जरूरी है।

1. ईशान्य में खाई या गड्डे का होना अनिवार्य है।
2. नर्सिंग होम का मुख द्वार उच्च में ही होना है।
3. नर्सिंग होम के हर एक कमरे का द्वार ईशान्य में ही होना चाहिए।
4. दक्षिण एवं पश्चिम में बडे बडे पेड होना चाहिए। बैठने के लिए काले पत्थर के चबूतरे तथा नैरुति में एक उपगृह होना चाहिए।
5. मुख्य वैद्य का कन्सल्टेन्सी रूम नैरुति में ही होना श्रेष्ठ है। कमरे के आग्नेय अथवा वायुव्य में बात रूम बनाकर ईशान्य को बढालेना श्रेयस्कर होगा।
6. नर्सिंग होम को किसी भी खिस्म के बुरे स्ट्रीट फोकस नहीं होना चाहिए।
7. नर्सिंग होम में भारी यंत्र होते हैं। इसलिए पश्चिम या दक्षिण में आपरेशन थियेटर होना चाहिए। इसके बगल में ही आई.सि.यू तथा अन्य कमरे होना है।
8. हर एक कमरे के दरवाजे उच्च में ही होना है।

निर्माण में उपरोक्त विषयों पर ध्यान दें तो बिना पब्लिसिटी के ही नर्सिंग होम की प्रगति में चार चाँद लग जायेंगे। नर्सिंग होम के पुराने तकाजे दूर होजायेंगे। डाक्टरों को भी किसी प्रकार के टेन्शन नहीं होंगे। किसी प्रकार के झगडे न होंगे। नर्सिंग होम सन्तोष जनक प्रगति करेगी।

कारखाना

कारखाने ही नहीं, उसके मालिक का मकान भी वास्तु शास्त्र के अनुरूप बनाना चाहिए। इसमें केवल मालिक का हीनहीं उसमें काम करनेवाले मजदूरों का भी श्रेय जुडा होता है। अत: कारखाने के निर्माण में सावधानी बरतना है।

कारखाने में सारा वजन पश्चिम नैरुति तथा दक्षिण में ही रखना है। ईशान्य में कुँआ होना है। प्रहरि के निर्माण में भी सावधानी बरतना है। पूर्वी तथा उत्तरी दीवारो से पश्चिमी और दक्षिणी दीवारें मजबूत और ऊँची होना चाहिए। प्रहरी को नैरुति में उपगृह का निर्माण करने से अद्‌भुत परिणाम निकल सकते हैं। पिछले दशाब्द से कई मिल मालिक अपने कारखाने में अभिलषणीय सुधार करके अच्छे नतीजे पा रहे हैं। अनुभवी वास्तु शास्त्रियों के फीज की परवाह न कर, मुँह माँगे दाम देकर अपने अपने कारखानों के अन्तर्गत दोषों का निवारण कर ले रहे हैं। निचले दर्जे के वास्तु पंडितों पर भरोसा कर संपूर्ण ज्ञान रखने वाले वास्तु शास्त्रियों के सलाह से वास्तु शास्त्र का लाभ उठा रहे हैं।

कारखाना किसी दिशा में क्यों न हो उसके दरवाजे तो उच्च में ही होना चाहिए। पूर्वीरोड वाले कारखाने का मुख्य द्वार पूर्वी ईशान्य में दक्षिणी द्वार वाली कारखाने का मुख्य द्वार पश्चिम वायुव्य में तथा उत्तर रोडवाले कारखाने का मुख्य द्वार उत्तर ईशान्य में ही होना चाहिए। कारखाने के ईशान्य में एक कुँआ अथवा गड्डा होना चाहिए। यह भी कारखाने के निर्माण के अनुरूप होना है। छोटे कारखाने के लिए एक गड्डा और बडे कारखाने के लिए एक बडा कुँआ होना है। उदाहरण के तौर पर किसी विशाल भवन के पश्चिमी तट पर एक बडा नाला और वहीं कुछ झोंपडियाँ हों, तो नाले का प्रभाव विशाल भवन पर ही पडेगा। क्यों कि उसके पूर्व में यह नाला है। वास्तु शास्त्र एक अगाध – समुद्र जैसा है। इसलिए एक अनुभवी तथा योग्य वास्तु शास्त्रि की सलाह पर अवश्य संशोधन कर लेना है। तभी हमें उत्तम परिणाम मिलेंगे। यदि कारखाने के दक्षिण, पश्चिम तथा नैरुति में ऊँचे पेड हों और उसके अलावा अच्छी वीधि दृष्टि भी हों तो अपार शुभ प्राप्त होंगे।

वीधि दृष्टि अथवा वीधि शूल

पुराने जमाने के वास्तु शास्त्रियों को वीधि दृष्टि का उतना ज्ञान न था, जितना कि आज कल के वास्तु शास्त्रियों को गृह कितना ही वास्तु सम्मत क्यों न हो, इस दृष्टि का असर अवश्य पडेगा।

गली के सब जगहों की कतार को पार कर जो जगह आगे आता है, उसे ही वीधि दृष्टि कहते हैं। कोई सडक हमारे जगह तक लम्बी दिशा में आकर ठहर जायें, अथवा स्ट्रीट की दृष्टि पडने वाली पहली जगह को "स्ट्रीट फोकस" कहते हैं। अलग अलग स्ट्रीट फोकस के अलग अलग नतीजे निकाले जा सकते हैं।

स्ट्रीट फोकस	नतीजा
1. पूरब ईशान्य	पुरुषों को सर्वाधिकार प्राप्ति
2. उत्तर ईशान्य	संपत्ति एवं स्त्री सुखों की प्राप्ति
3. दक्षिण आग्नेय	शुभगमन
4. पूरब आग्नेय	अकाल मृत्यु, अग्नि प्रमाद आदी
5. दक्षिण नैरुति	संपता एवं स्त्रीसुख लोप
6. पश्चिम नैरुति	घर के मालिक को आधिपत्य लोप
7. पश्चिम वायुव्य	घर के मालिक को सर्वाधिकार प्राप्ति
8. उत्तर वायुव्य	संपदा एवं स्त्री सुख लोप

ईशान्य स्ट्रीट फोकस

पूरब

उत्तर

गृह

दक्षिण

पश्चिम
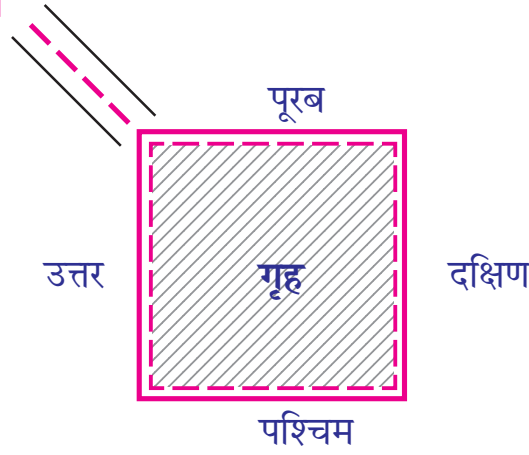
शुभगमन :- पूर्वोत्तर स्थान को ईशान्य कहते हैं। उपरोक्त चित्र में तीन तरह के ईशान्य स्ट्रीट फोकस देख सकते हैं। ऐसे स्ट्रीट फोकस वाले घर में रहने वाले अदृष्टवान होते हैं। आपकी नजर में ऐसे घर कहीं दिखाई दें तो जरूर खरीद लीजिए। साधारण तथा ऐसे घर बिक्री को नहीं रखे जाते। सिर्फ विदेश अथवा दूर प्रान्त को चले जाने वाले लोग ही बेचने बैठते हैं। किसी प्रकार के दुष्परिणामों के शिकार होकर कभी नहीं बेचते। ऐसे घरों में सदा शुभ ही शुभ होगा। कदापी अशुभ अथवा अनर्थ नहीं होगे। एसी जगह में वास्तु बद्धतावाला मकान बनजायें तो उसे "भूलोक वैकुंठ" कह सकते हैं।

ऐसे घर में निवास करने वाले लोगों को हमेशा मनःशान्ति, निरंतर धनवृद्धि, विदेश पर्यटन, वंशाभिवृद्धि, सर्व कार्य सानुकूलता दोष रहित कार्य संपन्नता, हृदयानंद, शिक्षा में बच्चों की तरक्की, सर्व मंगलता, सर्वार्थ सिद्धि, यशः कीर्ति, तेज, खुशी आदि प्राप्त होंगे।

केरल के एक रब्बर कारखाने का मालिक ईशान्य स्ट्रीट फोकस वाली जगह में पूरब आग्नेय मुख द्वार वाले घर में रहता था। फल स्वरूप उसका व्यापार कुछ दिनों तक अच्छा चलकर बाद में उलझनों में फँसगया। मैंने उससे कहा कि यह सब वास्तु लोप के ही कारण हो रहा है। मेरी सूचना पर उसने पूरब आग्नेय द्वार को बन्दकर पूर्व ईशान्य द्वार बनाकर उससे ही चलना शुरू किया। तीनों ही महीनों में अच्छे आसार नजर आने लगे। उसकी कारखाने मुनाफे कमाने लगी। उसके एम.सी.ए वाले पुत्र को अमेरिका में नौकरी मिलगई। इससे पहले चार प्रयत्न करने पर भी उसे सफलता नहीं, प्राप्त हुईथी। वास्तु विधि के अनुसार केवल द्वार को बदलाने से ही उसे सन्तुष्ट जनक प्रगति हासिल हुई।

यदि आप को ईशान्य वीधि दृष्टि वाले घर खरीदने के लिए न मिले तो कमसे कम भाडे पर ही क्यों न हो ऐसे घर में तुरंत पहुँचकर लाभ उठाइये। ऐसे घरों का भाडा भले ही ज्यादा ही क्यों न हो परवाह न कीजिए, आगे पीछे मत सोचिए। तुरंत पहुँच जाइये। पैसे तो एक ही दिन कमा सकोगे। ऐसे शुभ गृह में परंपरागत रहने का मौका मिलेतो बोलने को कुछ नहीं रहता। ऐसे घरों में उन्नत, महोन्नत बुद्धिमान, ज्ञान जीवी पैदा होंगे। ऐसे घरों मेंआजन्मान्त अष्ट सिद्धियाँ प्राप्त होंगीं।

उच्च-नीच स्थल कौन से हैं ?

उच्च स्थल	नीच स्थल
1. उत्तर ईशान्य	1. उत्तर वायुव्य
2. पूर्व ईशान्य	2. पूरब आग्नेय
3. दक्षिण आग्नेय	3. दक्षिण नैरुति
4. पश्चिम वायुव्य	4. पश्चिम नैरुति

भार योग्य स्थान
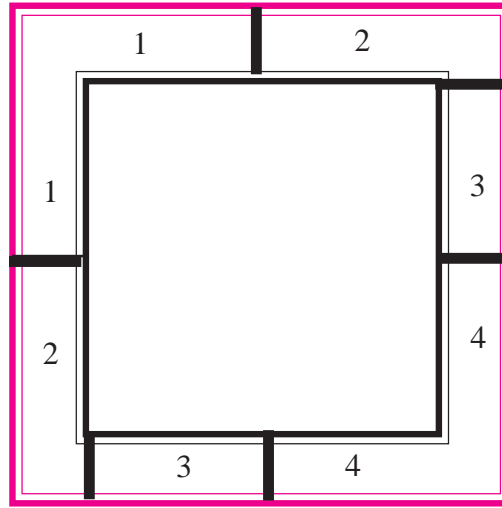
1 = कुछ भी भार नहीं रख सकते।
2, 3 = कम भार रख सकते हैं।
4 = अत्यधिक भार रख सकते हैं।

डैनिंग हाल

पुराने जमाने में किचन एवं डैनिंग हाल एकही थे। आधुनिक काल में डैनिंग हाल अलग बना रहे हैं। इन्हीं मे टि.वी सेट आदि भी रख रहे हैं। यथासंभव किचन के बगल में ही डैनिंग हाल बना लेना है। वास्तु के अनुसार किचन आग्नेय में ही होता है। इसलिए डैनिंग हाल भी आग्नेय में किचन के बगल में ही होना चाहिए। गृहस्थ को डैनिंग हाल के नैरुति हिस्से में बैठकर पूरब की ओर देखते हुए भोजन करना अच्छा है। फल स्वरूप खाना अच्छी तरह पचेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। मानसिक प्रशांतता भी मिलेगी।
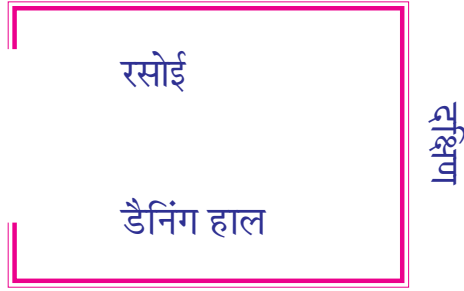
उपरोक्त नमूना पूरब, पश्चिम एवं उत्तर गृहवालों के लिए उपयुक्त होगा। लेकिन इस कमरे का द्वार ईशान्य या उत्तर में ही होना चाहिए। किचन एवं डैनिंग हाल के बीच में वायुव्य की ओर एक दीवार हो तो पके हुए पदार्थ आसान से डैनिंग हाल में ले जा सकते हैं। कुछ लोग दरवाजा रखे बिना एक खिडकी बराबर खाली जगह भी छोडते हैं। इसमें भी कुछ दोष नहीं है। यह भी शुभप्रद है। दक्षिण रोडवाले गृहों को किचन आग्नेय में बनालेने में तकलीफ होती है। ऐसे लोगों के लिए निम्न सूचित नमूना लाभ दायक होगा।
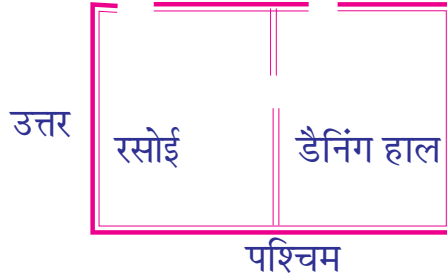
यह किचन घर के वायुव्य में ही हो सकता है। इस नमूने में भी दरवाजा ईशान्य में ही होगा।

उपसंहार

पुराने जमाने में हमारे पूर्वज सुख चैन से, उत्साह के साथ जीवन व्यतीत करते थे। आज जैसे टेन्शन, मानसिक क्षोभ, वेदना दुख आदी वे जानते ही न थे। सबसे मिलजुलकर रहते थे। खून के रिश्ते को तरहीज देते थे। आज जैसे आर्थिक सम्बन्ध मजबूत न थे। छोटे बडों का ख्याल किया जाता था। सत् सम्बन्धों के कारण वे बहुत खुशी से अपना जीवन व्यतीत करते थे। लेकिन आजका आदमी दिन भर धन कमाने की ताक में लगा रहता है। संतुष्टि के अभाव में वह दिन रात धन कमाने की ही बात सोचता है। उसकी नजर में धन ही सब कुछ है।

साधु सन्तें को देखिए। उनके पास खाने के लिए पर्याप्त खाना और पहनने के लिए पर्याप्त कपडा भी नहीं रहता। उनका ध्यान सदा भगवान के स्मरण में लीन रहता है। उसी में वे खुशी महसूस करते हैं। उनके निर्मल हृदय का पता उनके आँखों से ही व्यक्त होता है। मोक्ष साधना में मग्न थे सन्त सच्चिदानंद का लुत्फ लेते हैं। अत: हमेंभी धन के पीछे पडना छोडकर प्रशांत जीवन बिताने की बात सोचना है। इसके अलावा ईर्षा द्वेष का त्याग कर दूसरों की उन्नति पर खुशी प्रकट करने की क्षमता का साधन करना है। साथ ही साथ अपनी उन्नति के लिए भी प्रयास करते रहना है। इसीसे जरूर मानसिक प्रशांतता प्रप्त होगी और जन्म धन्य होगा।

ॐ शान्ति श्शान्तिः शान्तिः